

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति एवं सामाजिक समस्याएँ : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. के. पी. झाजाद

प्राचार्य

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर, नैकिन, सीधी, (म.प्र.)

शोध सारांश :

भारत में मानव अधिकारों के प्रति जागरूकता के विकास के साथ महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के प्रति चिंता बड़ी है। भारत में गुलामी की अवधि में सामाजिक स्थितियाँ क्रमशः बिगड़ती गयी और परतंत्रता की मानसिकता ने राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त की पंक्तियों को इस प्रकार चरितार्थ किया— “हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी आओ विचारे आज मिलकर ये समस्याएं सभी” आजादी के बाद 75 वर्षों की विकास यात्रा में देश में महिलाओं, उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति और सामाजिक मान्यताओं के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन की सुगबुगाहट अवश्य लक्षित है। लेकिन इस विशाल और अनगिनत विविधता वाले देश में इस परिवर्तन का अंश नगण्य ही है। संविधान में महिलाओं को पुरुषों के समान ही अधिकार दिए हैं, अत्याचारों से दबी उनकी दयनीय जीवन स्थितियों को रूपांतरित करने और सामाजिक, आर्थिक तथा विधिक पहचान बनाने के लिए कई कल्याणकारी मान्यताएं दी हैं। लेकिन उनकी विकास की स्थिति और दशा आज भी चिंतनीय है।

मुख्य शब्द – महिला, अधिकार, समानता, परिस्थिति, सामाजिक, समस्या, परिवार भूमिका।